धर्म जीवन

फरवरी 2005

- ✡ माता के सम्बंध में
  - ✡ विकास क्रम की अद्‌भुत देन
- ✡ मैं अपने सौभाग्य को अनुभव करती हूं
  - ✡ एक योग्य पुत्री
- ✡ बच्चों के व्यक्तित्व का विकास कैसे करें?
  - ✡ गुरु ने माता पिता दिखा दिए
- ✡ जीवन प्रसंग
  - ✡ NEW LIFE INFUSING INFLUENCES
- ✡ PEARLS SUBLIME.....

2

माता के सम्बंध में

मेरी माता जन्म दाता, तुम्हीं से ज़िन्दगी मेरी,
तुम्हीं रक्षक सदा मेरी, तुम्हीं पुश्तो पनाह मेरी।

तेरा उल्फत भरा दिल गर न होता पासबां मेरा,
तो बेहोशी में जाने क्या हुई होती दशा मेरी।

कड़ाकेदार जाड़ों में, अगर मैं रात को उठता,
किसे बेदार करती थी, सिवा तेरे सदा मेरी।

अन्धेरी रात तूफां में, कलेजे से लगा लेती,
मुबादा खौफ़ दहशत से, हो जां नन्हीं हवा मेरी।

ज़बाने बेज़बानी में जो मैं कुछ बात करता था,
कोई समझे न मतलब तू समझती बात का मेरी।

हुआ बीमार मैं और रात दिन तड़पा किया तूने,
मुसीबत तुम पे होती थी, मुसीबत से सवा मेरी।

अजब तासीर हाथों में है, रंजो ग़म भुलाने की,
नज़र उल्फ़त भरी तेरी, है दुखों की दवा मेरी।

मेरे दुख के तेरे दिल में खटकने से यह साबित है,
बना रखी है, अपने दिल में तूने इक जगह मेरी।

कोई साथी रफ़ीक़ ऐसा नहीं, जैसी कि तू माता,
वह साथी ऐश के और तू शरीक़े हर बला मेरी।

दिया उपकार का बदला तुझे उल्टा सताया है,
मुझे अब याद आती है, वफ़ा तेरी जफ़ा मेरी।

कभी शिकवा न इस पर भी, ज़ुबां से तेरी सुन पाया,
तुझे देखा तो बस करते हुए सिफ़तो सना मेरी।

रहा गफ़लत में गो बरसों, 'अलम' दिल में समाया है,
मैं अब तुम्हारा बन जाऊं, रही है तू सदा मेरी।

धर्म जीवन

खण्ड 17 अंक 2
फरवरी 2005
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

विकास क्रम की अद्भुत देन

इस महोत्सव की सारी सभाओं में से यह एक शिरोमणि और विशेष सभा महासभा थी कि जिसमें 18 दिसम्बर को स्वयं पूर्णांग और सच्चे धर्म अवतार श्री देव गुरु भगवान देवात्मा ने तशरीफ लाकर और अपने मुखतलिफ सूबों के सैंकड़ों सेवकों और श्रद्धालुओं आदि को दर्शन देकर अपने बूढ़े कमजोर और रोगी शरीर के बावजूद प्राय: सवा तीन घंटे तक लगातार खड़े रह कर अपना निहायत तेजस्वी और देव प्रभावशाली सालाना एड्रेस दिया। भगवान का यह व्याख़्यान अपने में नज़ीर आप ही था, और इस के द्वारा भगवान ने अधिकारी दिलों तक अपनी लासानी देव ज्योति और अपना लासानी देव तेज पहुंचाकर उनमें जिस किस्म की हलचल और आश्चर्यजनक तबदीली पैदा कर दी, उसका ब्यान नहीं हो सकता।

इस व्याख्यान में भगवान ने नेचर के विकास के सिलसिले में फरमाया, कि किस तरह जड़ और शक्ति के अमल से नेचर का एक एक हिस्सा तबदील होते होते लाखों वर्षों में नेबूला यानि एक किस्म के आतशी हवाई मादा की शक्ल कबूल करता है कि जिसे इस ज़माने के वैज्ञानिक दूरबीन के द्वारा मशाहदे कर सकते हैं और फिर यह हवाई मादा धीरे धीरे तबदील होकर लाखों वर्षो में एक एक सूर्य की शक्ल कबूल करता है, कि जिस तरीके से हमारा अपना सूर्य भी बना है और फिर किस तरह हमारे सूर्य की अपनी शक्ति से लगातार चक्कर खाने से खास समय में उसका एक एक टुकड़ा एक दूसरे के बाद अलग अलग होकर जमीन और मंगल और बुद्ध और बृहस्पती और शुक्र और शनि और राहू और केतु नामी ग्रहों की शक्ल में ज़ाहर हुआ। और फिर किस तरह हमारी ज़मीन जो पहले आग की तरह तप रही थी वह लाखों वर्षों में धीरे धीरे ठंडी होते होते इस हालत में आई कि उसका ऊपर का एक मोटा पड़त ठोस बन गया। और उसके ठोस बन जाने पर उसमें कई किस्म की धातुओं का ज़हूर हुआ और फिर लाखों वर्षों के बाद इन धातों में जो निर्जीव यानि बेजान शक्ति मौजूद थी, वह सजीव यानि जानदार बन गई, और उसमें यानि जीवनी शक्ति की आरम्भिक अनुभूति के लक्षण प्रगट हुए और किस तरह इस वक्त के

आलम बिजली के एक औज़ार के द्वारा निर्जीव शक्ति और जीवनी शक्ति की हकीकत के पहचानने और उन में तमीज़ करने के लायक हुए हैं और फिर इस आरम्भिक जीवनशक्ति में से किस तरह धीरे धीरे एक एक सैल के जिंदा जिस्म बने और फिर वनस्पति और पशु जगत की जीवनी शक्तियों का ज़हूर हुआ और किस तरह इन एक एक सैल का शरीर रखने वाली जीवनी शक्तियों में एक सैल से ज्यादा, कई यहां तक कि लाखों और करोड़ों सैलों से विभूषित भिन्न भिन्न पौधे और पशुओं की उत्पति हुई और फिर पशु जगत के विकास के सिलसिले में लाखों वर्ष के बाद इंसान का जहूर हुआ और फिर इस इंसानी दुनियां के लाखों वर्षों के विकास के सिलसिले में देवात्मा का अद्वितीय आविर्भाव हुआ। भगवान ने फरमाया कि जिस तरह पौधों और पशुओं की गठनकारी जीवनी शक्ति धातुओं की अपेक्षा अपनी विशेषता रखती है और मनुष्य का आत्मा अपनी उन्नतशील बुद्धि अकल और भाषा शक्ति के कारण पशुओं और उनके नीचे के सब जगतों से विशेषता और फज़लीयत रखता है, उसी तरह देवात्मा अपनी विशेष और बिल्कुल निराली देव शक्तियों की वजह से इस दुनियां के कुल इंसानों से अपनी विशेषता और फज़लियत रखता है। यह देवात्मा अपनी जिन देवशक्तियों अर्थात :-

(1) सत्य विषयक पूर्णांग अनुराग

(2) असत्य विषयक पूर्णांग विराग

(3) हित विषयक पूर्णांग अनुराग

(4) अहित विषयक पूर्णांग विराग शक्तियों को बीज रूप में लेकर प्रकट हुए थे। उनके विकसित होने पर उसके भीतर से जिस आश्चर्यजनक देवज्योति और देव तेज का प्रकाश हुआ है, इस देव ज्योति और देव तेज का भी और कहीं प्रकाश नहीं हुआ, और इन्हीं दोनों चीज़ों की किरणों या लहरों को देव प्रभाव कहते हैं। देवात्मा की यह लासानी देव ज्योति अपनी यह विशेषता रखती है कि वह जब किसी अधिकारी यानि काबिल आत्मा में घुसने का मौका पाती है, तब उसका वह अंधेरा दूर होता है, कि जिसका नाम आत्मिक अंधकार है। और जो किसी किस्म की किसी और रोशनी से दूर नहीं हो सकता और इसीलिए उस से पहले इंसानी दुनिया की किसी आत्मा के भीतर से दूर नहीं हुआ और देवात्मा से पहले किसी इंसान और उसकी रूह की सच्ची हकीकत नहीं खुली। इस देव ज्योति की धीरे धीरे उन्नति से देवात्मा ने आत्मा के रूप और उसके रोगों और उसके पतन और उसके नाश और उसकी कुशल के संबंध में नेचर की सच्ची घटनाओं और नियमों के बिना पर जो जो महा गूढ़ तत्व या सत्य देखे हैं, और उन्हें देख कर उसने विज्ञान-मूलक धर्म की शिक्षा दी है, वह उस से पहले इंसानी दुनिया का कोई इंसान नहीं देख सकता था और न उनकी किसी मज़हब या मल्लत के हादी या पैगम्बर या अवतार या गुरू या ऋषि और मुनि या बुद्ध या तीर्थंकर या खुदा या ईश्वर या देवी या देवता ने शिक्षा दी है। इसलिए दुनिया के तमाम धर्म क्या ईश्वर या खुदा वगैरा किसी किस्म के माबूद के यकीन के लिहाज़ से और इबादत या पूजा पाप या पुण्य और उसके नतीजों वगैरा भिन्न भिन्न प्रकार की और बातों के लिहाज़ से बिल्कुल झूठी गपों या गुमराही पर निर्भर हैं।

इसी तरह देवात्मा का लासानी देव तेज

इंसानी रूहों में दाखिल होकर उनके अंदर के भिन्न भिन्न किस्म के रोगों के लिए कि जो उनके पतन और विनाश का कारण हैं (और जिन्हें उसकी देव ज्योति दिखाती है) जिस प्रकार घृणा और जिस प्रकार के दुख को पैदा करके उन्हें एक या दूसरी ऐसी नीच गति से इसी दुनिया में मोक्ष देता है और उनके भीतर उनकी योग्यता के अनुसार किसी हितकर उच्च भाव को पैदा करता है, उस देव तेज का यह अमल भी कतई निराला है और इसीलिए देव तेज के इस अमल से सैंकड़ों रूहों में जिस प्रकार का आश्चर्यजनक परिवर्तन आया है, वह परिवर्तन दुनिया के किसी भाग में और किसी कहलाने वाले ईश्वर, खुदा या पैगम्बर या ऋषि या मुनि या बुद्ध या तीर्थंकर या गुरु वगैरा के द्वारा नहीं आया। और जैसे पहले नहीं आया, वैसे ही अब भी कहीं और नहीं आ रहा, क्योंकि ऐसा परिवर्तन केवल देवात्मा की विशेष देव शक्तियों के द्वारा ही सम्भव था और सम्भव है। और इसके अतिरिक्त और किसी के द्वारा वह न पहले सम्भव था और न अब सम्भव है और इस कुल आश्चर्यजनक परिवर्तन को लाकर देवात्मा ने देव समाज जैसी जो सच्चे धर्म पर आधारित सोसाइटी जिन विशेष प्रकार के बड़े बड़े पापों से मोक्षप्राप्त जनों की कायम की है, वैसी सोसाइटी या समाज भी इस दुनिया में कहीं नहीं और न देवात्मा के सिवाए किसी और के ज़रिए हां कहलाने वाले ईश्वर या खुदा के ज़रिए भी किसी ऐसी सोसाइटी का कायम होना ही मुमकिन है।

तब नेचर के करोड़ों और अरबों वर्षों के संग्राम से जिस देवात्मा का ज़हूर हुआ है उसकी जो विशेषता और अज़मत है, और उसके द्वारा इंसानी दुनिया की जिस प्रकार का उच्च परिवर्तन का एक नया ज़माना या युग शुरू हुआ है, और इंसानी दुनिया की इस किस्म की तबदीली के इलावा इस से नीचे की दुनियाओं के भले का जो क्रम जारी हुआ है और जिस का प्रमाण किसी न किसी दरजा में उनके द्वारा पैदा की हुई देव समाज में मौजूद है। हाए! यह परम हितकर देव समाज कहां है? उसे आज के इस खास दिन में तुम लोग भी अपनी अपनी योग्यता के अनुसार देखने की कोशिश करो परन्तु अभी तक उसकी विशेषता और अज़मत को भली भांत देखने के लिए लोगों में जिस किस्म की रूहानी योग्यता की आवश्यकता है, वह अभी उन्हें हासिल नहीं। कल इंसानी दुनिया के लोग जिस कदर धीरे धीरे अपने झूठे धर्मों के अकीदों और सब से बढ़कर रूहानी खौफनाक अंधकार से निकलने का मौका पाएंगे, उसी कदर वह आहिस्ता – आहिस्ता देवात्मा की विशेषता और अज़मत और उसकी शरण लेने की जरूरत को अधिक से अधिक महसूस करेंगे।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 2716914

मैं अपने सौभाग्य को अनुभव करती हूं

आजकल माता पिता संतान यज्ञ के दिनों में विशेषरूप से माता पिता की याद ताजा हो जाती है। माता पिता के उपकारों का बदला तो कोई भी चुका नहीं सकता, परन्तु मैं यह गहराई से अनुभव करती हूं, कि जिन बच्चों के माता पिता में जितने अधिक सद्गुण होते हैं, उच्च शारीरिक, मानसिक, वा हार्दिक योग्यताएं होती हैं, उनको अपने बड़े बज़ुरगों से उच्च गुणों से भरपूर पूंजी मिलती है, उनकी संतान होना बहुत ही सौभाग्य की चीज़ है और उनके उपकारों का बदला चुकाया जाना और भी असम्भव है।

मैं सचमुच अपने सौभाग्य की कोई सीमा नहीं देखती, जब मैं यह याद करती हूं कि मैं किस माता पिता की संतान हूं। पहले मैं अपनी माता को देखती हूं, जो एक सुन्दर शख्सीयत की मालिक थीं और एक ओर अनगिनत गुण मुझे उनके आगे झुकाते हैं, दूसरा उनकी संतान कहलाना मुझे गर्व से भर देता है।

मेरी माता जी तीन चाचा, ताया व अपने पिता की संतान थीं। उनके एक 10 वर्ष बड़ी बहन थी। दोनों बहनों ने विशेष गुण अपने बजुरगों से पाए। उनके पिता वा ताया चाचा विशेष रूप से उच्च कोटि की मान्सिक योग्यताएं रखते थे और गांव में लोग उनकी बुद्धि और बलिष्टता के आगे नतमस्तक होते थे और उनका कई गांवों में विशेष सम्मान था। मेरी माता जी को उनसे अथाह प्यार मिला, जो प्यार उन्होंने सारी उम्र अपनी संतान, उनके बच्चों और अन्य सम्बन्धियों में दिल खोलकर बांटा। उनका हमें इस उम्र में गोदी में लिटाकर सिर पर हाथ रख रखकर पलोसना याद आता है, तो अश्रुधारा बहने लगती है। हमें तो क्या उनके अधीन काम करने वालों, घर में सहायक जनों को भी उनका प्यार वा हमदर्दी नहीं भूलती। उनके प्रत्येक दुख सुख को सुनना और उसके दूर करने का यत्न करना उनके स्वभाव में था। आर्थिक रूप से कमज़ोर सम्बन्धियों की सहायता के उपाय सोचते रहना और हम सब बहन भाईयों को भी उनकी सहायता के लिए प्रेरित करते रहना। उनमें हमदर्दी का भी अत्यंत कीमती भाव मिला था, जिससे वह दूसरे के दुख को भांप लेती थीं और इतना हौंसला देतीं कि निराशावान जन को आशावादी बना देतीं।

मेरे माता जी के भीतर चीज़ों का कोई मोह नहीं था बच्चों का मोह अवश्य था। अपने पास न कभी उन्होंने पैसा रखा और न कभी जेवरात। अच्छे कपड़े पहनने का शौक था, परन्तु जब ज्यादा हो जाते और कभी मैं उन्हें कह देती कि बेजी कुछ और कपड़े निकाल दो, तो फौरन कहती कि जो तुम्हें ठीक लगे किसी को दे दो। कई बार कीमती सूट भी जो एक बार पहने होते और लगता कि मैंने अब इनको कम ही पहनना है तो दे देती। बिना सिले सूट भी जब मिल जाते किसी उपहार में तो आते ही सोच लेती कि यह तो मैं फलां को दे दूंगी।

किसी चीज़ का भण्डार उन्होंने अपने पास इकट्ठा नहीं किया।

मेरे माता जी में अच्छा खाना बनाने और फिर अधिक से अधिक लोगों को खिलाकर खुश करने का भाव था। सिलाई कढ़ाई बहुत छोटी उम्र में कर लेती थी और जब हम छोटी थी तो हमें कढ़ाई वाले बहुत सुन्दर फ्राक खुद बना बनाकर पहनाती और इसलिए हम सब बच्चों की कपड़े आदि के विचार से अलग पहचान होती थी।

माताजी हम सब बच्चों, पिताजी, अपनी बहुओं के बिमार हो जाने पर निस्सार हो जाती थी और तीक्ष्ण बुद्धि से उसका कारण ढूंढ़ लेती और अपने बहुत कीमती और उपयोगी सुझाव देती। एक बार मैंने फोन किया कि बेजी मेरा पेट खराब हो गया है और मैं स्कूल से घर वापिस आ गई हूं। मैं प्रिंसीपल थी, परन्तु उन्होंने मुझे फौरन कहा कि बेटा कुछ न कुछ पीते रहना, पानी न खत्म हो जाए अभी उनके कहे थोड़ा ही समय हुआ था कि सचमुच ही मुझे **Dehyderation** हो गई मेरी जुबान सूख गई, बोलना बंद हो गया और खुशकिस्मती से बेटा घर में था, **Medical student** था उसने फौरन **Glucose** आदि का प्रबंध किया और मैं बच गई।

मेरे माता जी ने मेरे पिता जी का हर दुख सुख में बहुत बहादुरी से साथ दिया है। एक ओर वह अंधेरे से भी डरने वाली, दूसरी ओर यू. पी. के जंगलों में पूरी पूरी रात शेरों के, सांप के होते हुए मजदूरों से काम करवाने का साहस। क्या गजब का व्यक्तित्व था।

देव समाज में आकर उनकी योग्यताएं और निखरी। उन्होंने विकासालय का इम्तिहान पास किया। सुन सुन कर याद किया और मैं छटी सातवीं में पढ़ती थी, जब उनके बोलने पर मैंने पेपर लिखे। उन दिनों उन्होंने एक लेख लिखाया था, "शरण तुम्हारी न आती मैं, तो क्या होती कहां होती।" वह पूजनीय भगवान देवात्मा की शरण में आकर जो लाभ मिले थे, उनको साफ साफ देखती थीं।

मेरे माता जी की मान्सिक शक्तियां बहुत गज़ब की थी। हम बच्चों को जिन जिन को उनका अधिक अंश मिला है, वह कुछ का कुछ बन गए हैं, और बन रहे हैं। बेशक वह स्वयं पढ़ी लिखी नहीं थीं, परन्तु पढ़ाई की उन्हें बेहद कदर थी। विशेष रूप से अपनी बेटियों को वह अपने पैरों पर खड़ा करना चाहती थीं। इसके लिए उन्हें बड़ी विरोधता का सामना करना पड़ा। पिता जी की बिमारी और यू. पी की ज़मीन से घाटे पड़े तो कई हमदर्द लोगों की यही सलाह थी कि लड़कियों की पढ़ाई बंद कर दो और यह जवान हो रही हैं, तो उनकी विरोधता का सामना किया और साफ ऐलान कर दिया कि मैं अपनी बेटियों को पढ़ाऊंगी चाहे उसके लिए मेरा कुछ भी बिक जाए। मैं नहीं चाहती कि जो मुसीबत आज मुझ पर आई है, वह कल बच्चियों पर आए और वह बेसहारा रहें। उन्होंने यह ऐलान ही नहीं किया बल्कि हम चारों बहनों में से तीन एम. ए., बी. एड. हुई और छोटी ने पी. एच. डी. तक शिक्षा पाई। सब प्रिंसीपल के पद तक पहुंचीं। सतिन्द्र ढिल्लों आज भी नौकरी पर हैं, उनकी उपलब्धियां कितनी हैं, वह अलग विषय है।

मेरे माता जी के भीतर प्रबंध की बहुत योग्यता थी। उनकी सब योग्यताओं को स्मरण करे, तो उनके आगे दिल झुक जाता है। और अपने

सौभाग्य की कोई सीमा दिखाई नहीं देती कि मैं उस माता की संतान हूं उनके मुझे पालने, बिमारियों में बहुत बुद्धिमानी से मेरी रक्षा करने, मुझे शिक्षा देने, मुझ पर इन्तहा भरोसा करने, प्यार का अमूल्य खजाना लुटाने, मुझे खिलाने पिलाने, मेरे बच्चों को प्यार देने, मुझे अच्छी शिक्षा देने के लिए अमूल्य उपकार किए हैं, उनके लिए मैं उनकी इतनी आभारी हूं कि चाहकर भी उसका बदला नहीं चुका सकती। आप जिस प्रकार हमारे आने का इंतजार करती थीं और चाहे हम कितने आपके पास रहें, तो भी आपका दिल नहीं भरता था और हमेशा आते हुए पूछती अब कब आओगी। आपकी अवर्तमानता बहुत बड़ा घाटा है, परन्तु नेचर के नियमों को टाला नहीं जा सकता। उनकी याद आज भी साथ है और परलोक से सदा उनका आशीर्वाद मिलता रहेगा। मुझे खुशी है कि मैंने अपनी माता से कभी मोटे तौर पर गल्त व्यवहार नहीं किया। सदा ही उनके विश्वास की पात्र रही, यह मेरा सौभाग्य है।

मेरे पिता जी भी एक आकर्षणीय व्यक्तित्व के मालिक थे। वह अपने भीतर श्रद्धा, कृतज्ञता देवात्मा के मिशन के लिए फनाह होने का ज़ज्बा रखते थे बेशक कई बार गल्त रहनुमाई में उन्होंने हानि उठाई, परन्तु जब उन्हें पता लग जाता था तो साफगोई से उसको स्वीकार कर लेते थे। अपनी गल्ती के लिए क्षमा मांगना उनके लिए तनिक भी कठिन नहीं था। वह मोह से बहुत कुछ बचे हुए थे। उनकी अनथक मेहनत पूजनीय भगवान से सम्बन्धित भारत के हर स्थान पर दृष्टिगोचर होती है। हमारे मेहरबानों ने उन्हें गुरु महाराज के बूढ़े जरनैल का पद बख्शा था, बेशक अन्त में उन लोगों की मेहरबानी से ही वह अत्यधिक सदमों में से गुजरे। परन्तु गुरु के प्रति उनकी श्रद्धा कभी कम नहीं हुई। जो काम मन में ठान लेते थे, उसके लिए कमर कस लेते थे। फिरोजशाह का स्कूल विशेष सम्मान के योग्य श्रीमान गोपीचन्द जी के बाद खत्म होने को था। परन्तु पिता जी के भीतर इतनी तड़प थी। एक दो महीनों में ही क्या उसकी बिल्डिंग बनाने, क्या नई अध्यापिकाएं रखने, क्या बच्चों को प्रेरित करके स्कूल की संख्या बढ़ाने में उन्होंने ऐसा काम किया कि देखने वालों को विश्वास नहीं होता था। अच्छे काम के लिए दूसरों को भी प्रेरित कर लेते थे। गुरु महाराज के साथ आत्माओं को जोड़ने की बेहद तड़प थी। किसी को पापों में फंसा देखकर उसको बचाने में जुट जाते थे।

उनका ऐसा सदगुणधारी रूप मेरे सौभाग्य का विषय है। उनके उपकार हैं कि जो उन्होंने हमें परम पूजनीय भगवान देवात्मा से जोड़ दिया, हमारी भलाई का मार्ग खुल गया। हमारी पालना में उन्होंने जो संघर्ष किया, अपनी जान पर खेले हैं। उनके इन उपकारों का बदला दिया नहीं जा सकता। वह सदा दूसरों की सेवा करने के लिए प्रेरित करते थे। हमारी उपलब्धियों पर फख़र से भर जाते थे। उनसे मिली अध्यात्मिक पूंजी, मेरी कीमती विरासत है। मैं, तुच्छ ऐसे दान के दाता माता पिता को शत शत प्रणाम करती हूं और उनसे सदा आशीर्वाद की भिक्षा मांगती हूं और उनको कभी भी दुख पहुंचाया हो, उसके लिए क्षमा मांगती हूं, उनके उपकारों से रोम रोम उपकृत हूं।

उनकी प्यारी बेटी

सुरजीत

एक योग्य पुत्री

मिसिज सतिन्दर ढिल्लों जो डाक्टर इकबाल सिंह जी की बेटी है और देव समाज कालिज आफ ऐजूकेशन की प्रिंसीपल हैं, उन्होंने अपनी योग्यता वा अच्छे व्यवहारों से अपने परिवार के लिए और समाज के लिए बहुत नाम कमाया है, हमें खुशी है कि वह :-

1996 से 2008 तक पंजाब यूनिवर्सिटी की **Fellow** हैं। वह पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला की 2004 से 2006 तक **Nominated member** हैं। वह गुरु नानक यूनिवर्सिटी अमृतसर की भी 2004 से 2006 तक **Nominated member** हैं। वह पंजाब यूनिवर्सिटी चण्डीगढ़ की 1999 से लगातार 2005 तक **Faculty of education** की **Dean** हैं। वह पंजाब यूनिवर्सिटी चण्डीगढ़ **Board of studies in education** की 4 वर्ष के लिए **convener** हैं। **S.P.C.A.** (जो पशुओं पर अत्याचार रोकने के लिए बनी सोसाइटी) की प्रेसिडेंट हैं। **Women cell of the college** की **Chairperson** हैं **Human Rights** के **Chandigarh Chapter** की **President** हैं **Police** सदभावना कमेटी की **member** हैं। **Punjab University** की **Advisory committee** की मैंबर है। **Child welfare** कमेटी की **Chairperson** हैं। पंजाब यूनिवर्सिटी चण्डीगढ़ की **Inspection Committee of college** की **convener** हैं। **She acted as resource person cum chairperson of Inspection committee of NAAC.**

अपने इन महत्वपूर्ण पदों पर सराहनीय कामों के लिए उन्हें बहुत से **Award** मिले हैं। जो इस कदर हैं।

1. State Award from Chandigarh Administration for her involvement in social work activities on 15th August, 1993.

2. Received a National Award from NCERT for her research papers in 1994.

3. Honoured by Blood Donation society on 7th occasion में वह कई दफा अपना खून दे चुकी हैं और प्रतिवर्ष **Blood Donation Camp** कालिज में लगाए जाते हैं। **S.P.C.A.** ने उन्हें 4 बार सम्मानित किया है।

She has been honoured by the National forum of Educational Research & Development of her exceptional contribution to the field of education.

She is honoured by Mega Educational Conference with the Millennium award for environmental conservation in Bhopal an international Association educators for world peace of Asian Institute of Human Right Institute.

She has been awarded 'Jewal of India and National Udyog Excellence Award by International Institute of Education and Management, New Delhi.

She got Great Indian Achievers Award and Gold medal (Certificate of

Excellence) and certificate of felicilation by friendship forum of Indian, New Delhi.

हम इन सब **Achievements** के लिए मिसिज़ सतिन्द्र ढिल्लों को बहुत मुबारकबाद देते हैं, वहां उनके माता पिता को भी श्रद्धांजलि भेंट करते हैं, जिन्हांने ऐसी बेटी को जन्म दिया, वह अपने घर में चौथी बेटी थीं, तब तक कोई बेटा न होने के कारण उनके जन्म पर कोई खुशी नहीं हुई। परन्तु उनके माता पिता को देवात्मा का दर मिल चुका था, इसलिए सतिन्द्र जी का पालन पोषण देवात्मा के देव प्रभाव दायक मण्डल में हुआ जहां उनके गुणों को निखरने का मौका मिला और उन्होंने अपने माता पिता, बहन भाईयों और समाज का नाम रोशन किया है। इन सब उपलब्धियों के होते हुए उनमें विनम्रता कूट कूट कर भरी हुई है। उनको मिलकर आप अंदाजा नहीं लगा सकते कि इसकी इतनी उपलब्धियाँ हैं। उनमें दूसरों की सहायता करने का जज़्बा तो कमाल का है। हर समय अपने किसी दुख सुख का ध्यान न रखते हुए सदा दूसरों की सहायता के लिए तत्पर रहती हैं। हम ऐसे गुणवान व्यक्तित्व को जहां सम्मान देते हैं, वहां उन्हें मुबारकबाद देते हैं।

बच्चों के व्यक्तित्व का विकास कैसे करें?

माता पिता के लिए बच्चे खुशी का स्रोत हैं। जैसे फूलों से बगीचे महकते हैं, वैसे ही बच्चों की किलकारियाँ घर के वातावरण को महकाती हैं। बेहद तकलीफ दुख, असहनीय पीड़ा से गुज़रकर जब मां बच्चे को जन्म देती है तो उस असीम खुशी को मां ही समझ सकती है और महसूस कर सकती है पिता का दर्जा पाकर पुरुष भी फूला नहीं समाता। बच्चों की परवरिश में माता पिता अपना सब कुछ सारे सुख आराम खुशी खुशी न्यौछावर कर देते हैं और बच्चे का विकास देखकर, उसकी तोतली बातें सुनकर उनकी खुशी सातवें आसमान पर होती है। आज की सुख सुविधाओं की दुनियां में प्रत्येक माता पिता अपनी हैसीयत से भी बढ़कर अपने बच्चों को सुख सुविधाएं प्रदान करना चाहते हैं। अच्छे से अच्छे स्कूल में पढ़ाना चाहते हैं। आधुनिक खिलौने लाकर देते हैं। उन्हें घुमाने फिराने के प्रोग्राम बनाते हैं। इस सब के साथ अकसर माता पिता उनके शारीरिक और बौद्धिक पक्ष को विकसित करने के ही पक्ष में रहते हैं, लेकिन एक संतुलन और व्यवस्थित जीवनयापन करने के लिए उन्हें किस प्रकार पालना है, उसकी ओर बहुत कम ध्यान दे पाते हैं। उनको सही जीवन मूल्य सिखाने में अकसर वह असफल हो जाते हैं, जिससे वह दुनयवी लिहाज़ से तो कई बार बहुत सफल भी हो जाते हैं, परन्तु वह अच्छे इंसान नहीं बन पाते, यहां तक कि माता पिता के प्रति भी स्वार्थी बन जाते हैं।

एक नौजवान ने बताया कि बचपन में उसने कुछ ऐसी गल्तियां की हैं जो नैतिकता के विरूद्ध थी परन्तु मेरे माता पिता ने उसे एक बार भी नहीं कहा कि यह तुमने गल्ती की है, या इसमें क्या गल्ती है। इस प्रकार उसे सारी उमर गलत और ठीक का एहसास ही नहीं हुआ। नौजवानी के जोश में कई बार माता पिता की बातों को बच्चे अनसुना

कर देते हैं। उनको आलोचक समझते हैं, परन्तु गल्त और ठीक का एहसास दिलाते दिलाते वह अपनी उम्र में आकर उन बातों का लाभ उठाते हैं।

(1) सर्वप्रथम माता पिता को अधिक लाड़ प्यार वा अधिक सख्त व्यवहार से परहेज़ करना चाहिए। एक ओर उनके साथ मित्रवत व्यवहार होना, उन्हें भरपूर प्यार देना और दूसरी ओर उन्हें अनुशासित रखने के लिए प्यार से समझाना और आवश्यकता पड़ने पर सख्त व्यवहार भी करना आवश्यक है। यह संतुलन बच्चे को व्यवस्थित व्यवहार सिखाता है।

(2) एक ओर बच्चे के गल्त काम की तर्क सहित आलोचना और दूसरी और उसकी छोटी छोटी उपलब्धियों की प्रशंसा बच्चे को अच्छे और बुरे का विवेक देती है।

(3) बच्चों की उपलब्धियों पर एक ओर उन्हें शाबाश देना आवश्यक है, दूसरी और उन्हें यह समझाने की आवश्यकता है कि यह उपलब्धि किस किस की मेहरबानी से है। कहां से उसे योग्यता मिली, किसने उस योग्यता को बढ़ाया। इससे बच्चे के घमंड बढ़ने पर रोक लगती है।

(4) बच्चों को खाने पीने में भी अनुशासित रखने की आवश्यकता है। आज के युग में इतना **Junkfood** खाने को है कि यदि बच्चों को खाने के विषय में सतर्क न किया जाए, तो एक ओर स्वास्थ्य सम्बंधी परेशानियां उठानी पड़ती हैं और दूसरी ओर कई बार खा खाकर बच्चे इतने मोटे हो जाते हैं कि सारी उम्र उसके दुख भोगते हैं। लाड प्यार का कोई तरीका होता है। गल्त खान पान का आदी बनाकर आप प्यार नहीं शत्रुता का व्यवहार करते हैं।

(5) बच्चों की बोलचाल पर भी अनुशासन की आवश्यकता है। बड़ों के साथ कैसा व्यवहार करना है। घर में यदि कोई बिमार है तो उसके प्रति संवेदनशील बनना है। अपने दादा दादी, नाना नानी का कैसे सत्कार वा सेवा करनी है, यह जीवन मूल्य यदि पैदा नहीं कर सकते, तो वह दिन दूर नहीं जब आपके बच्चे आपके लिए ही मुसीबत बन जाएंगे।

(6) बच्चों को समय पर सदोपयोग सिखाना अति आवश्यक है। पढ़ाई के समय यदि आप शुरू से ही बच्चे को टी.वी. देखने या अन्य फजूल कार्यक्रमों से नहीं रोकेंगे तो ज्यों ज्यों बड़े होंगे, उनकी वह आदत नहीं छूटेगी और अपने कैरीयर में पिछड़ जाएंगे।

बच्चों को जन्म देना और उनके शरीर की पालना करना और उन्हें शिक्षा देना भी बहुत कठिन काम है। परन्तु सबसे कठिन काम उन्हें नेक और सफल इंसान बनाना है। ऐसे बच्चे बनें कि जो अपने माता पिता, अपने बड़ों, अपने अध्यापकों के लिए सम्मान प्रदर्शन करें, वह दूसरों के लिए कुछ कर गुज़रने की भावना रखते हों ताकि वह सोसाईटी के लिए बोझ नहीं, बल्कि उनका उपयोगी अंग बन सकें।

सुरजीत बराड़

गुरु ने माता पिता दिखा दिए

मैं समझता हूं कि परम पूजनीय परम भगवान देवात्मा के चरणों में आकर ही मुझे असल होश आई है। गुरु की शरण में आने के बाद भी मेरी जिन्दगी में कई प्रकार की कठिनाईयां आईं, परन्तु गुरु महाराज की शिक्षा के अनुसार मैंने उनका हल ढूंढा। यदि मैं इस दर पर न आता तो मेरी मौत और घर की बर्बादी होनी थी। अब मुझे जिन्दगी में कोई ऐसी मुश्किल दिखाई नहीं देती कि जिसका मैं हल नहीं ढूंढ सकता। यह सब मेरे गुरु की कृपा से है। मैं अपने सब सम्बन्धियों को कहता हूं कि यदि स्वर्ग में रहना है, तो गुरु महाराज के चरणों से जुड़ जाओ।

सब उपकारी सामने आने से पहले मुझे उस महान व्यक्तित्व श्रद्धा के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी का उपकार नज़र आता है कि जिन्होंने 300 किलोमीटर लगातार जा जाकर मेरे साथ सम्पर्क रखा और मुझे दूसरे उपकारी नज़र आने लग गए हैं। मैंने पहले अमृत छका, दसवीं कलास में कलेरा वाले संतों के पास गया, फिर राधा स्वामी बना। परन्तु परम पूजनीय भगवान देवात्मा के साथ जुड़कर मेरे भाग्य खुल गए। मुझे जो भी कइिनाईयां आती हैं, वह गुरु की रोशनी में हल हो जाती हैं।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा की शरण में आने से पहले मैं अपने माता पिता वा अन्य सम्बन्धियों को जानता जरूर था परन्तु वास्तव में पहचानता नहीं था। मेरे सब सम्बंध सुख को लेकर थे। मैं अपनी बहनों के पास जाता जरूर था, भाई के पास भी जाता था, परन्तु उन्हें मिलकर जो सुख वा खुशी अब मिलती है, कभी नहीं मिलती थी।

अब माता पिता का उपकारी रूप नज़र आया है। मैं अपने बहन भाईयों में सबसे छोटा हूं। पहली बात तो, यह कि बेटे की चाह में मेरे माता पिता ने पहले तीन बेटियों को जन्म दिया और मेरे जन्म पर उन्होंने इन्तहा खुशी मनाई। इतने बड़े परिवार को सम्भालना कोई आसान काम नहीं। मेरे माता पिता बहुत अच्छे नैतिक असूल रखते थे, इसीलिए ही आज सारा परिवार सुखी है।

मेरे माता पिता ने सारी जिन्दगी एक दूसरे की सलाह से जिन्दगी चलाई। मैंने उन्हें कभी लड़ते झगड़ते नहीं देखा। मेरे पिता का कोई भाई नहीं था। गांव में रहते थे। 13 वर्ष के थे कि उनके पिता का देहान्त हो गया। उसके बाद उन्होंने 3 मेरी भुआ और 8 हम बहन भाईयों की शादियां कीं। मेरे पिता जी के ताया के बेटे डाकुओं से मिल गए थे, उन्होंने हमारे घर में चोरी भी करवाई और मेरे पिता जी को मरवाने की भी कोशिशें की। मेरे पिता जी बहुत ईमानदार थे। मेरे जन्म से पहले ही उन्होंने मांस शराब छोड़ दिया था। मेरी बहनों की शादी में उन्होंने किसी को मांस शराब नहीं दिया। हमारे दोनों भाईयों की शादी में उन्होंने मांस शराब का प्रयोग नहीं किया। गांव में बिमार होने पर लोगों की बहुत सेवा करते थे। गांव में उनका बहुत सम्मान था। वह

पंचायत के मैम्बर भी रहे। गांव में स्कूल बनाने वा गुरुद्वारे बनाने के लिए दान इकट्ठा किया। उनके इन गुणों के कारण हम सब सुखी हैं।

गांव में कई प्रकार की दुश्मनी और डर के कारण उन्होंने गांव की ज़मीन बेचकर शहर में ली। सब बहन भाईयों को हमारी योग्यताओं के अनुसार शिक्षा दिलवाई। नई ज़मीन को आबाद करने में वह बहुत कष्टों में से गुज़रे, यहां तक आर्थिक कठिनाईयां आई कि मेरे भाई को मैडीकल की एक लाईन में दाखिला मिल गया, परन्तु पिता जी खर्च देने में असमर्थ थे, उन्हें नहीं भेज सके। मैं छटी क्लास में पढ़ता था, मुझे याद है कि मेरे माता जी रोते रहते थे मेरे परिवार का क्या बनेगा। यह मेरे माता पिता की परीक्षा की घड़ी थी। परन्तु इन हालातों में भी उन्होंने कभी फटा पुराना कपड़ा नहीं पहनने दिया। कभी टूटे जूते नहीं पहनने दिए। हम बहन भाईयों को और खाने, पीने ओढ़ने पहनने में कभी कोई कमी नहीं आने दी।

जब इन हालातों में मेरा बड़ा भाई बालिग हो गया तो गांव की ज़मीन का मुकद्मा करके वह वापिस ले सकता था, जबकि जितने में सौदा हुआ था, उसकी कीमत तीन गुणा हो चुकी थी। हमारे रिश्तेदारों ने भी ऐसा करने की सलाह दी परन्तु मेरे पिता जी ऐसा करने से साफ इंकार कर दिया और अपनी ईमानदारी पर आंच नहीं आने दी। इसी कारण आज हम खुश हैं।

जब मैंने दसवीं पास की और मेरे से बड़ी बहन की शादी एक साल पहले हो चुकी थी वह बेहद नेक स्वभाव की थी, परन्तु पति ने मजबूर किया कि हम गांव छोड़कर शहर रहना चाहते हैं, उसके लिए 5000 रूपये और अपने छोटे भाई को लेकर आओ। मेरे भाई ने बहुत विरोधता की कि उसकी पढ़ाई खराब मत करो। मेरी बहन ने भी कहा कि यदि आप इसको नहीं भेज सकते तो मैं सारी उम्र गांव में ही रह लूंगी, परन्तु पिता जी वायदा कर चुके थे, उन्होंने मुझे भी भेजा और 5000 रूपये ब्याज पर लेकर दिए। सारी उम्र मेरे पिता जी अपने प्रण के पक्के रहे। इस कारण मेरे माता पिता को मेरे पास लुधियाना रहना पड़ा। जिन मुसीबतों से मेरे माता पिता गुज़रे हैं शायद ही कोई माता पिता गुज़रे हों। हमारी शिक्षा और उन्नति के लिए उनको अपना आप बेचने में भी गरेज़ नहीं था। उनकी इन कुर्बानियों के कारण ही हमारी सब बहनें अपने घरों में सुखी हैं, हम दोनों भाईयों के पास बहुत धन और जायदाद हैं, हम सब खुश हैं। अब तो यही कामना है कि मैं ऐसी संगत से जुड़ा रहूं और ऐसे कुर्बानी के पुतले माता पिता की अधिक से अधिक सेवा कर सकूं।

(एक सेवक)

जीवन प्रसंग

1. हर सांस में बसी है मां

राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने कहा, उनके हर पल, हर सांस में आज भी उनकी कृशकाय मां रची बसी है। जिन्होंने पेट काट कर न केवल परिवार को पाला पोसा बल्कि उसे बांधे रखा। वे अपने जीवन में मां के अलावा दूसरी महिला भक्ति संगीत साम्राज्ञी एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी से प्रभावित रहे।

यहां राष्ट्रीय महिला आयोग द्वारा आयोजित भारत की महिलाओं का सपना कार्यक्रम में दिल्ली की स्कूली बच्चियों को कलाम ने बताया कि 1941 में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जब वह 11 वर्ष के थे तो उनकी मां राशन का केरोसिन बचाकर उनके लिए रात 12.00 बजे तक लालटेन जलाने की व्यवस्था करती थी ताकि वे पढ़ सकें। यही नहीं, शाम को मां उन्हें आंचल में छिपाकर अपने हिस्से की रोटी भी खिला देती थीं। कलाम ने कहा कि मां द्वारा आंचल में छिपाकर अपने हिस्से की रोटी खिलाना उन्हें आज भी बेचैन करता है। राष्ट्रपति ने अपने संघर्षमय जीवन की झलक देते हुए बताया कि वे 4.00 बजे उठते थे और नहा कर गणित की ट्यूशन पढ़ने जाते थे क्योंकि ट्यूशन देने वाले मास्टर जी ने उनको साफ हिदायत दी थी कि सुबह नहा-धोकर आएगा तभी तुम्हें मुफ्त में ट्यूशन पढ़ाऊँगा। उसके बाद वह अपने चचेरे भाई के साथ तीन किलोमीटर दूर अखबार बांटने जाते थे। सुब्बुलक्ष्मी के भक्ति संगीत की प्रशंसा करते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि उनके गायन में दैवीय स्पर्श था। इस वर्ष दिसम्बर में जब वे उनके निधन पर चेन्नई स्थित उनके घर गए थे वहां उन्हें एक अलग किस्म की अध्यात्मिक शांति मिली। राष्ट्रपति ने बच्चियों को सीख दी कि वे हमेशा बड़ा सोचें, कभी भी किसी से न डरें। ईमानदारी से अपने रास्ते पर दृढ़ता से चलती रहें और समस्याओं को परास्त करें।

दैनिक भास्कर

2. अकारण उदासी

टाइम्स के लिए मालविका संघवी को दिए साक्षात्कार में करण जौहर ने कहा है कि सुनीता मेनन उनकी मनोवैज्ञानिक चिकित्सक हैं और वे नियमित रूप से उनसे बात करते हैं तथा समस्याओं के निदान में सहायता मिलती है। वे जब सुनीता के कक्ष से बाहर आते हैं तो स्वयं को सशक्त पाते हैं और उनका आत्मविश्वास बढ़ जाता है। दरअसल यह करण जौहर का साहस है कि उन्होंने गोपनीय बात को आम कर दिया कि उन्हें मनोवैज्ञानिक समस्याएं हैं। भारत में आमतौर पर ऐसी बातों को गोपनीय रखते हैं। अपने को पूरी तरह समझने की गलतफहमी का शिकार अधिकांश लोग होते हैं।

मनुष्य के मन में अंधेरी कंदरा में कितने राज छिपे होते हैं, यह कोई नहीं बता सकता। मनोचिकित्सक इस कार्य में सहायक होते हैं परन्तु हम उनकी सहायता से अपने को दूर रखते हैं जैसे बेडौल आदमी आदमकद आइने से बचता है। अपनी

कमजोरियों का हम सामना नहीं करना चाहते। हम अपने सपनों और डर की शल्य चिकित्सा नहीं कराना चाहते। हमारे यहां पर भी प्रचारित है कि पागल व्यक्ति ही मनोचिकित्सक से ईलाज कराता है। दरअसल नार्मल कोई भी नहीं है। कुछ लोगों का नार्मल होने का अभिनय सफल हो जाता है।

बहरहाल करण जौहर को सुनीता मेनन ने स्वयं को पहचानने में सहायता की है। करण के पिता यश ने शायद 42 वर्ष की अवस्था में विवाह किया था अत: आयु के अंतर के कारण वे अपने पुत्र के मित्र नहीं हो सकते थे और उनके बीच अनेक अंतर रहे हैं। करण हमेशा तन्हा और संजीदा रहे। उन्हें माता पिता से प्यार मिला किंतु कोई हम उम्र राजदां नहीं था। उनका परिवार गैर फिल्मी इलाके मलबार हिल में रहता था, जहां मुम्बई के धनाढ्य और राजनेता रहते हैं। फिल्म से उसे वितृष्णा नहीं थी परन्तु कोई लगाव भी नहीं था। उसके मन में अकारण अज्ञात दुख उमड़ आता था और नैराश्य में कुछ लोगों को ज्यादा भूख लगती है। अत: करण मोटा हो गया। बाल सखा आदित्य चोपड़ा की प्रेरणा और सहयोग से वह 'दिल वाले दुल्हनियां' से जुड़ा। उसकी लगन और व्यवहार से प्रभावित शाहरुख और काजोल की प्रेरणा से उसने 'कुछ कुछ होता है' बनाई।

आज करण जौहर दुबला पतला है और सफलता के शिखर पर विराजमान है। वह अपने भय और संकोच पर विजय प्राप्त कर चुका है। परन्तु आज भी अकारण उदासी उसे घेर लेती है। आज वह मनोरंजन उद्योग का लाडला है। सुन्दर और अविवाहित है। परन्तु अकारण उदासी के साए आज भी मंडराते हैं। उसकी साफगोई काबिले तारीफ है। इस प्रकरण से यह भी सिद्ध होता है कि सफलता सुख और शान्ति का पर्याय नहीं होता है। संभवत: चुटकी भर अध्यात्मिकता अकारण उदासी को भगा सकती है। इसका मूल बचपन की पटकथा में भी मिल सकता है।

3. थोड़ी सी हंसी और जीवन में ढेर सारी खुशी

आदमी एक अद्‌भुत जानवर है। इनमें से कई स्वयं के जख़्मों को सहलाकर आनंदित होते हैं, कैसे? हम सभी जानते हैं कि हंसने से तनाव ख़त्म होता है। हम यह भी जानते हैं कि हंसी से सस्ती और आसानी से मिलने वाली कोई वस्तु नहीं है। फिर भी यह जानते हुए कि तनाव हमारे लिए नुकसानदेह है, हम तनाव पैदा करने वाले तत्वों को ही प्राथमिकता देते हैं। मस्तिष्क और शरीर का गहरा संबंध है। मस्तिष्क शरीर को अच्छा या बीमार बना सकता है। यह स्वयं हमारे ऊपर निर्भर है। मस्तिष्क हंसी या तनाव पैदा कर सकता है।

हंसना प्रकृति की सबसे अच्छी दवा है। हंसने से आदमी आंतरिक रूप से खुश हो जाता है। और हम सब तरफ से अच्छा महसूस करते हैं। हंसा कैसे जाए? दिलचस्प किताबों को पढ़िए, मज़ाकिया लोगाों से मिलिए, हास्य फिल्में देखिए- चार्ली चैपलिन से शुरू कीजिए। अच्छे चुटकुले सुनिए। इन चुटकुलों में से कुछ बहुत हंसाने वाले होते हैं और वे आपका काफी तनाव कम करते हैं, करते रहिए, कोशिश करते रहिए, हंसते रहिए। उन पुरुषों और स्त्रियों के साथ मत रहिए जो न तो हंसते हैं, न हंसाते हैं, न हंस सकते हैं और न ही कभी

हंसेंगे। कभी भी ऐसा मजाक मत कीजिए जो आप खुद सहन नहीं कर सकते और तब आप दूसरे लोगों से यह आशा रख सकते हैं कि वे आपको चुटकुले ऐसे सुनाएंगे, जो कि आपको और उनको हंसाएंगे। हंसना एक छूत के रोग की तरह है। यह सब साधारण सामान्य ज्ञान की बात है। फिर भी क्यों 86 प्रतिशत लोग हंसने के तरीकों को नहीं अपनाते और तनाव कम नहीं करते? खुशी और हंसना एक धर्म की भांति है। परन्तु सभी धर्माचार्यों में कोई कोई आदमी एक तरफ तो अमर नीति शास्त्र सुना सकता है और दूसरी तरफ जीवन की अच्छी चीज़ों का आन्नद ले सकता है।

हंसना एक प्रार्थना है। अगर आप हंस सकते हैं, तो आपने प्रार्थना करना सीख लिया है। गंभीर मत होइए। एक गंभीर व्यक्ति कभी भी धार्मिक नहीं हो सकता। एक व्यक्ति जो न सिर्फ दूसरों पर बल्कि अपने आप पर भी हंस सकता है, वह धार्मिक भी हो सकता है। किसी ने कहा है, "मैंने गंभीर पेड़ नहीं देखा-न एक गंभीर चिड़िया। मैंने एक गंभीर सूर्योदय होते हुए नहीं देखा है। 'मैंने तारों से पूर्ण गंभीर रात को नहीं देखा।' 'गंभीरता एक बीमारी है। अध्यात्मिकता भी एक जीवन मुक्त हंसी और मजे का मार्ग बन सकता है।'

कल्याण सत्संग

हर वर्ष की तरह इस साल भी कल्याण मल्लिका तहसील नथाना, जिला भटिंडा में विशेष सत्संग और माता पिता सम्बंधी विशेष सभा 11 फरवरी से 13 फरवरी, 2005 तक रखी गई है। उक्त कल्याण गांव भटिंडा, भगता, मोगा, जलंधर वाली सड़क पर स्थित है। पाठकों से निवेदन है कि वे इस अति कल्याणकारी शुभ अवसर पर स्वयं व अन्य अधिकारी साथियों सहित पहुंचकर लाभ उठाएं।

यात्रियों की सहूलियत, रिहायश और भोजन आदि का कुल प्रबंध स्थानी सेवक हमेशा की तरह करने की खुशी प्राप्त करेंगें।

- मंत्री

NEW LIFE INFUSING INFLUENCES

"क्या हाल पूछते हो मेरे कारोबार का
आईने बेचता हूँ अन्धों के शहर में "

The aforesaid couplet is 100% true as regards the life infusing *Dev Prabhavas* (highest spiritual influences) being delivered by Bhagwan Devatma free of cost to us. Most unfortunately, we human beings being bound by our compulsive love for pleasures (सुख) and compulsive hatred for pain (दुख), are blind to what our Bhagwan is providing us with. As a result, we are forced to follow a path where our thoughts and behaviour in respect of other existences in nature are dictated by our aforesaid low loves and low hates. The result is for all of us to see and experience in our day to day life. Our interpersonal relationships and our relations with the physical, plant and animal kingdoms are far from satisfactory. Increasing misery and pain in our daily life results from our pursuit of such pleasures irrespective of how harmful or beneficial that pursuit may be for us.

The very first relationship that is established when we come into being in this world is that between our parents and us. We owe our very existence to our parents but rarely ever think seriously about it. As a consequence, with each year of our growth, our relationship with our parents on the one hand and later on with our children (after we become parents) becomes more and more sour. No doubt, therefore, that our pursuit of pleasures and shunning legitimate pain causes undue misery and grief to them as well as us.

Our most worshipful Bhagwan Devatma is not only showering his highest spiritual light (*Dev Jyoti*) and highest spiritual power (*Dev Tej*) to help and guide us to a path where our relationship with our parents and/or our children is based on chords of higher harmony and peace and is mutually most beneficial. Bhagwan Devatma, through his *Dev Jyoti*, bestowing us with a unique insight that enables us to see and realize our shortcomings and wrongs in our relations and appreciate and admire the greatness and grandeur of our parents and other existences in nature with each one of whom we are intimately connected.

Only Bhagwan Devatma could, therefore, infuse respect and reverence in our relationship with our parents. Just a few days ago, a young boy studying in class XI who had attended just 3 spiritual congregations was enlightened by Bhagwan's unique highest spiritual light (*Dev Jyoti*). He expressed his feelings thus:

".....When I thought about the good qualities of my parents and my ugly and undesirable behaviour in contrast, then I realized how much suffering I am causing to my parents. I wish to share with you a few specific things:

1. In spite of my wrong and pain causing actions, my parents never made me feel that they do not love me.
2. My parents are very much older than I, yet they do much more hard work than I and one can't even judge from their faces how tired they are.
3. After spending hours thinking about it, I cannot understand how my parents are able to make both ends meet at home (with a large family to support) in the little earning my father makes. They meet all my demands and never make me feel deprived or unprovided. In spite of this, I become obstinate and inisist on my demands and get annoyed with them in case any of my demands are not met.
4. My father is often on tour, leaving on mondays and returning on saturdays. He eats in petty restaurants and rest houses just to save some money and spend it on my studies. Many a time, my parents have to cut down on their very urgent needs.
5. When I come to the institute for my studies, I waste their hard earned money by going out and eating junk food (while not eating from my tiffin) and then making lame excuses that I became hungry and therefore I had to spend money. On the other hand, my parents go out for work on sundays in the morning and return in the evening without eating anything. They even take their tea only after returning home in order to save some money to spend on my studies.
6. Many a time, I have talked to them in anger. When I compare myself with my parents, then I feel that I am nowhere close to the dust of their feet.
7. When they try to make me understand something after some offensive utterences of mine, I think that they don't know anything. I know how to study, etc. I have already suffered a lot in my studies because of this arrogance.

In the end, I wish to say that in future, I will respect my parents and teachers and obey them fully and work towards minimizing my shortcomings and advise other fellow students also to do so."

How such wonderful higher changes are being brought about by our most worshipful Bhagwan Devatma in fit souls! Let us partake of at least some of the blessings being ceaselessly showered by him. Let us try to prove that we are not citizens of the city of the blind mentioned in the beginning of this article. Let us not be deprived of obtaining mirrors *poviding Dev Jyoti* and *Dev Tej* being so generously and kindly bestowed selflessly by Bhagwan Devatma.

PEARLS SUBLIME

Proclamations of Bhagwan Devatma freely translated from "*Param Poojniya Bhagwan Devatma ke besh baha vachnon ka gutka*" published in Urdu in 1964.

Pertaining to Nature

1. It is not beyond the capability of any human being to disprove any truth of nature

   (Jeevan Tatva 28.06.1927)

2. In the course of its evolution, Nature looks upon all myths with utter contempt and anhilataes it. That is why those who deal in this counterfeit currency are bound to go bankrupt in the end.

   (Jeevan Tatva 28.06.1927)

3. On acquiring true knowledge and true attainment of understanding about the law of evolution in Nature, man obtains the true key to the true belief that in the struggle prevalent in nature, ultimately it is the truth that triumphs over falsehood and the good over the evil.

   (Satya Dev Samvad 11.10.1932)

4. It is an immutable law of nature that those who are selfish or self-seekers head towards spiritual degradation as a result of going contrary to the immutable law of evolution.

   (Jeevan Tatva 28.03.1933)

5. Nature is true now as it has been in the past and will remain ever so. The laws of nature are true now as they have been true in the past and will always remain so. From the point of view of its true existence and its true and immutable laws, Nature is perfectly trustworthy now as it has been in the past and will ever remain so.

   (Jeevan Tatva 07.06.1927)

6. This Nature and Nature alone has always existed and will continue to exist. Therefore, this Nature is eternal and self existing.

   (Satya Dev Samvad 02.06.1931)

7. This Nature and Nature alone is one and only true touchstone for the distinction of every kind of true and false knowledge.
8. This very Nature alone is the one and only one treasure house of all true and false knowledge of every kind or is a unique book of true knowledge.
9. In Nature, we are surrounded from all sides by its immutable laws and we, in our senses, cannot afford to tread the path of life with closed eyes. Rather our safety and our good lies in our becoming able to see, understand and comply with those laws.

   (Bhagwan Devatma's sermon at Solan)

10. Evolutionary forces of nature have no interest in the betterment of an individual who does not do his utmost for his betterment or evolution. Such a person is bound to degrade himself.

    (Satya Dev Samvad 12.08.1930)

Regd. Postal No.Pb (0050) 2003
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

पाठ और विचार विषयक वार्षिक साधनों की तालिका

1.	माता पिता और संतान के सम्बंध में	29 जनवरी शनिवार	गणेश चौथ
2.	भाई बहनों के सम्बंध में	13 फरवरी इतवार	बसंत पंचमी
3.	देव समाज के सम्बंध में	5,6 मार्च शनिवार, इतवार	
4.	पति पत्नि के सम्बंध में	25 मार्च शुक्रवार	होली
5.	उद्भिद् जगत् के सम्बंध में	9 अप्रैल शनिवार	
6.	भृत्य स्वामी के सम्बंध में	25 अप्रैल सोमवार	
7.	वंशीय जनों के सम्बंध में	22 मई इतवार	
8.	स्वदेश के सम्बंध में	18 जून शनिवार निर्जला एकादशी	
9.	साथी सेवकों के सम्बंध में	20,21 जुलाई बुधवार, वीरवार	
10.	स्वास्तित्व के सम्बंध में	18,19 अगस्त वीरवार, शुक्रवार	रक्षा बंधन
11.	पशु जगत के सम्बंध में	11 सितम्बर इतवार	
12.	परलोक के सम्बंध में	3 अक्तूबर सोमवार	
13.	स्वजाति के सम्बंध में	12 अक्तूबर बुधवार	दशहरा
14.	भौतिक जगत के सम्बंध में	1 नवम्बर मंगलवार	दिवाली
15.	मनुष्य मात्र के सम्बंध में	15 नवम्बर मंगलवार	
16.	परम पूज्नीय भगवान देवात्मा के सम्बंध में	14, 15, 16, 17 दिसम्बर बुधवार, वीरवार, शुक्रवार, शनिवार विशेष दिन 16 दिसम्बर शुक्रवार	

नोट : 1. परम पूजनीय भगवान देवात्मा का शुभ जन्मदिन 16 दिसम्बर 2005 ई. शुक्रवार।

2. साधनों के जो जो विशेष दिन किसी हिन्दू त्यौहार के दिन नियत किए गए हैं, वह साधन विविध स्थानों में उसी दिन में किए जावें कि जिस दिन वह त्योहार मनाया जाये।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts